भारत की कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस वक्तव्य

दिनांक–05 मई, 2017

महान नक्सलबाड़ी किसान सशस्त्र संघर्ष की 50 वीं वर्षगांठ को क्रांतिकारी जय–जयकार!

महान नक्सलबाड़ी के किसान सशस्त्र संघर्ष को इस साल 50 वर्ष पूरे हो रहे हैं. इस मौके पर सबसे पहले नक्सलबाड़ी के किसान सशस्त्र संघर्ष में एवं उसके बाद से लेकर अब तक उसी राह पर चलते हुए हमारे देश में 'जोतने वाले को जमीन' के आधार पर कृषि क्रांति को सफल बनाते हुए नवजनवादी क्रांति को विजयी बनाने के महान लक्ष्य के लिए दीर्घकालीन जनयुद्ध के रास्ते आगे बढ़ने के दौरान दुश्मन के सशस्त्र बलों के साथ लोहा लेते हुए अपनी अनमोल जानों की कुरबानी देने वाले करीबन 15 हजार वीर योद्धाओं को हम विनम्रतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और उनके अधूरे आशयों को पूरा करने का दृढ़ संकल्प लेते हैं. इन महान शहीदों में नक्सलबाड़ी के प्रणेता कॉ. चारु मजुमदार एवं नक्सलबाड़ी की सशस्त्र कृषि क्रांति की राजनीति को ऊंचा उठाते हुए एक और क्रांतिकारी प्रवाह का सृजन करने वाले कॉ. कन्हाई चटर्जी, केंद्रीय कमेटी के सदस्यों से लेकर क्रांतिकारी जनता तक शामिल हैं.

महान नक्सलबाड़ी किसान सशस्त्र संघर्ष की 50 वीं वर्षगांठ की क्रांतिकारी जय–जयकार करते हुए इस मौके पर दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी तमाम पार्टी कतारों, पीएलजीए के जांबाज कमांडरों व लाल योद्धाओं, जनता ना सरकारों के नेताओं व कार्यकर्ताओं, जन संगठनों के कार्यकर्ताओं व सदस्यों, क्रांतिकारी जनता, क्रांतिकारी आन्दोलन के मददगारों व समर्थकों का जोशीला अभिनंदन करती है और गांव–गांव में जोशो–खरोश के साथ इस वर्षगांठ को आगामी 23 से 29 मई तक मनाने, सभा–सम्मेलनों, रैलियों का आयोजन करने व नक्सलबाड़ी की संघर्ष विरासत को ऊंचा उठाए रखने, संशोधनवाद के खिलाफ सतत् संघर्ष करने, जनयुद्ध को तेज करके ऑपरेशन ग्रीनहंट को हराने एवं क्रांतिकारी जनता ना सरकारों को मजबूत करने व उनका विस्तार करने का संकल्प लेने, शहीद स्मारकों का निर्माण करने का आह्वान करती है.

नक्सलबाड़ी के किसान सशस्त्र संघर्ष ने भारत देश में एक सही क्रांतिकारी सर्वहारा पार्टी – भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी–लेनिनवादी)–सीपीआई (एमएल) को जन्म दिया था. नक्सलबाड़ी आज देश की उत्पीड़ित जनता के हाथों में एक महाशक्ति बन गया है. उसने संशोधनवाद व नव संशोधनवाद की कमर तोड़ दी. सड़ी–गली संसदीय राजनीति का भंडाफोड़ करते हुए उसने चुनाव बहिष्कार के नारे को बुलंद किया. दीर्घकालिक जनयुद्ध की राह को ऊंचा उठाया. मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा को स्वीकार किया. पहली बार भारत की सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था के चरित्र व स्वभाव का सही विश्लेषण करते हुए उसे अर्धऔपनिवेशिक व अर्ध सामंती करार दिया. 1970 में आयोजित पार्टी कांग्रेस ने भारत की क्रांति से जुड़े तमाम सैद्धातिक, राजनीतिक व सांगठनिक सवालों को सही दिशा में हल करने की कोशिश की. भूमि समस्या को केंद्र में लाकर कृषि क्रांति के कार्यक्रम को अपनाया. ग्रामीण इलाकों को प्रधान कार्यक्षेत्र बनाया. आर्थिक संघर्षों की जगह राजसत्ता हासिल करने के कर्तव्य को प्रधान कार्यभार बनाया. दुश्मन का सामना करने के लिए तीन अद्भुत हथियार–मजबूत व गुप्त पार्टी, सेना व संयुक्त मोर्चे के निर्माण की आवश्यकता को चिन्हित किया.

पार्टी कांग्रेस के कुछ समय बाद ही वामपंथी दुस्साहसिकवाद, संकीर्णतावाद व मनोगतवाद हावी हो गया था. साथ ही दुश्मन के भयानक दमन के चलते पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व को असहनीय क्षति हुई. कॉ. चारु मजुमदार दुश्मन के गिरफ्त में 28 जुलाई, 1972 को शहीद हुए. पार्टी केंद्र ध्वस्त हो गया था. वामपंथ व दक्षिणपंथी अवसरवाद के चलते पार्टी विभाजित हो गयी थी. लेकिन बची हुई सही क्रांतिकारी शक्तियां जहां का वहां आन्दोलन के निर्माण में जुट गयी. इसी क्रम में देश के अलग–अलग इलाकों में सही क्रांतिकारी शक्तियां अलग–अलग धाराओं के रूप में कार्य करने लगी थी. 22 अप्रैल, 1980 को सीपीआई (एमएल) (पीपुल्स वार) की स्थापना हुई थी. सीपीआईएमएल (पार्टी युनिटी), सीपीआई (एमएल) (नक्सलबाड़ी) आदि अलग से काम करने लगी. एमसीसीआई अलग धारा के रूप में कार्यरत थी. कइयों ने दीर्घकालीन सशस्त्र संघर्ष का रास्ता छोड़कर दक्षिणपंथी अवसरवाद को अपना लिया और चुनावों को कार्यनीति के तौर पर इस्तेमाल करने के नाम पर उसी दलदल में फंस गए. 1998 में पीपुल्सवार और पार्टी युनिटी की एकता हुई. बाद में 2004 में भारतीय क्रांति की दो मुख्य धाराएं पीपुल्सवार और एमसीसीआई एक होकर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी का गठन हुआ. 2014 में सीपीआई माओवादी और नक्सलबाड़ी का विलय हुआ. इस तरह भारत की कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी भारत के सर्वहारा का प्रतिनिधित्व करने वाली असली व सही क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में कार्यरत है.

नक्सलबाड़ी के वर्ग संघर्ष की विरासत को आगे बढ़ाते हुए भाकपा (माओवादी) ने देश के 16 राज्यों में क्रांतिकारी आन्दोलन का निर्माण किया है. हालांकि अलग–अलग राज्यों में आन्दोलन का स्तर अलग–अलग है. जनसेना के बगैर जनता को कुछ भी हासिल

नहीं होगा, माओ की सीख को ध्यान में रखकर 2 दिसंबर, 2000 को जन मुक्ति छापामार सेना का निर्माण किया गया है. पीएलजीए के अभी सेक्शन से लेकर बटालियन स्तर के फार्मेशन संचालित हैं. पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए जनयुद्ध को संचालित कर रही है. दुश्मन के दमन अभियानों का मुकाबला करने के लिए संचालित विभिन्न ऑपरेशनों, कार्यनीतिक जवाबी हमलों के अभियानों में पीएलजीए दुश्मन बलों के एक सेक्शन से लेकर एक कंपनी तक का सफाया करने की ताकत रखती है. जनयुद्ध का स्तर भी अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग स्तरों पर है.

दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते पर चलते हुए दुश्मन की सत्ता व सशस्त्र ताकत को कमजोर करते हुए रणनीतिक संयुक्त मोर्चे की हैसियत से जन राजसत्ता के अंगों के रूप में क्रांतिकारी जनता ना सरकारों (क्रांतिकारी जन कमेटियां) का गठन दण्डकारण्य, बिहार–झारखंड, एओबी इलाकों में किया गया है. दण्डकारण्य में पंचायत, एरिया, जिला स्तर की जन सरकारों को स्थापित किया गया है. ये जनयुद्ध के संचालन में छापामार आधार इलाकों के रूप में कार्यरत हैं. जनता ना सरकारें जनयुद्ध के संचालन में पीएलजीए की हर संभव मदद करने में, भर्ती बढ़ाने में अपनी भूमिका बखूबी निभा रही हैं. जनजीवन के तमाम पहलुओं को छूते हुए उन्हें विकसित करने में, खासकर जमीन समतलीकरण, सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराते हुए कृषि उत्पादों में वृद्धि के लिए तीव्र कोशिश कर रही हैं.

अलग–अलग कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चों के जरिए राजकीय दमन, विस्थापन, ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवाद के खिलाफ एवं विभिन्न जन समस्याओं को लेकर जन संघर्षों को संचालित किया जा रहा है.

बढ़ते क्रांतिकारी आन्दोलन व जनयुद्ध को देखकर दुश्मन बौखलाकर जल्द से जल्द आन्दोलन का सफाया करने तद्वारा देश की सार्वजनिक संपत्ति व संसाधनों को कौड़ियों के भाव देशी, विदेशी कॉरपोरेट घरानों के हवाले करने एवं वैकल्पिक जन राजसत्ता को खत्म करने एड़ी चोटी का जोर लगा रहा है. इस हेतु 2009 से देशव्यापी फासीवादी दमन अभियान ग्रीनहंट संचालित है जोकि जनता पर जारी बहुआयामी युद्ध है. पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए, क्रांतिकारी जनता ना सरकारें व जन संगठन एवं जनता मिलकर बहादुरी से एवं अनगिनत कुरबानियां देते हुए दुश्मन का मुकाबला कर रही है और जनयुद्ध की जीतों को बचाए रखने के लिए एवं क्रांतिाकरी आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए दुढ़ संकल्पित है. इसी क्रम में पार्टी, सेना व जनता ना सरकारों व जन संगठनों सहित तमाम निर्माणों को मजबूत करने बोल्शेवीकरण अभियान, फील्ड प्रशिक्षण संचालित किया जा रहा है. बदलती परिस्थितियों के अनुरूप नयी कार्यनीति अपनाने हेतु सामाजिक शोध भी संचालित किया जा रहा है. जहां–जहां ये संचालित हुए हैं, वहां–वहां अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं.

नक्सलबाड़ी की 50 वीं वर्षगांठ के अवसर पर हमें हमारी पार्टी इतिहास, क्रांतिकारी आन्दोलन के विकास के परिणामक्रम यानी उतार–चढ़ावों, हार–जीतों व सबकों का विस्तार से व गहराई से अध्ययन करने, क्रांति के अनुकूल तेजी से बदलती देश, दुनिया की परिस्थितियों का बखूबी इस्तेमाल करने लायक हर तरह विकसित होने, नई चुनौतियों व सवालों का बोल्शेविक स्फूर्ति के साथ सामना करते हुए आगे कदम बढ़ाने का साहस करने का स्पेशल जोनल कमेटी पार्टी, पीएलजीए, जनता ना सरकारों, जन संगठनों की कतारों व जनता का आह्वान करती है. अंतिम जीत हमारी ही है, जनता की ही है.

विकल्प

(विकल्प)

प्रवक्ता

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)